سیدہ زینبؑ نمبر / مئی ۲۰۰۷ء

ماہنامہ شعاعِ عمل لکھنؤ

قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰی

قَدْ جَاءَكُمْ مِّنَ اللهِ نُوْرٌ وَّكِتَابٌ مُّبِيْنٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب





مؤسسۂ نورِ ہدایت حسینیۂ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

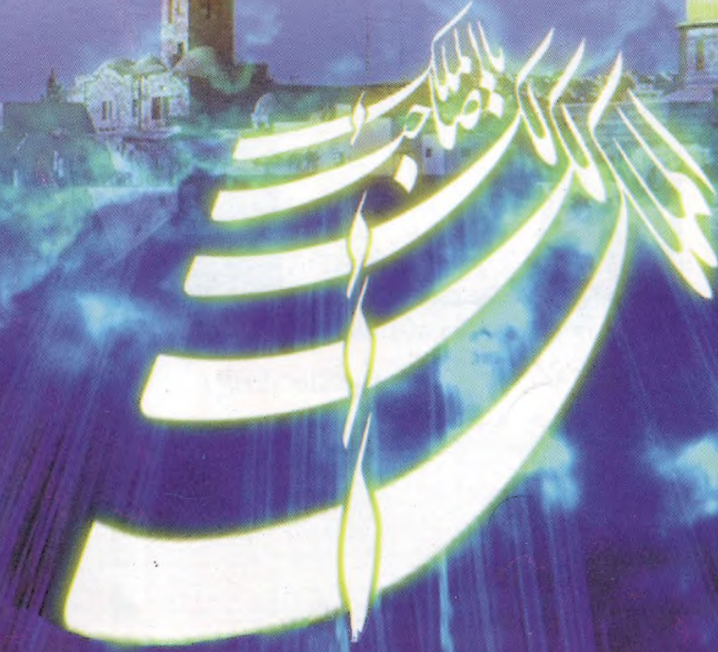
Lucknow

शुआ-ए-अमल

May 2007

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

लखनऊ





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष–3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक–11

माह मई – 2007 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
''लखनऊ''

वार्षिक – 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

website: www.noorehidayat.com
e-mail: noorehidayat@noorehidayat.com

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न0 मज़मून लेखक पेज न0

अक़वाले फातिमा ज़हरा (स0)

1– **माँ–बाप की इताअत अल्लाह के अज़ाब से महफूज़ रखती है।**

2– **बर्तनों की सफाई और पाकीज़गी नेमतों में इज़ाफा करती है।**

3– **वह औरत जो अपने शौहर को तकलीफ दे ख़ुदावन्दे आलम उसके नेक कामों को भी क़बूल न करेगा।**

4– **बीवी जब तक अपने शौहर का हक़ अदा न करे गोया उसने ख़ुदा के हक़ को अदा नहीं किया।**

5– **कपड़े धोना ग़म व ग़ुस्से को ख़त्म करता है।**

जनाब ज़ैनब (स0) की शख़सियत

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्येदुल उलमा सैय्यिद अली नक़ी ताबा सराह

आप हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) और जनाब फातिमा ज़हरा (स0) की बड़ी बेटी और पैग़म्बरे इस्लाम की बड़ी नवासी थीं। इस हैसियत से आप कर्बला के वाक़ेए में हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के बाद सबसे ज़्यादा मशहूर शख़सियत वाली थीं।

जब आपके बुजुर्ग दादा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (स0) और बुजुर्ग माँ जनाब फातिमा ज़हरा (स0) की वफात हुई है तो आप बहुत छोटी थीं। इनके बाद आप अपने बाप हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) की तरबियत के साये में परवरिश पाईं और हज़रत ने आपकी शादी अपने हक़ीक़ी भतीजे जनाब अब्दुल्लाह बिन जाफर के साथ की। जिनको उनकी फैय्याज़ी की बदौलत ''बह्‌रुल जूद'' (सख़ावत का समन्दर) के लक़ब से याद किया जाता था।

जनाब अमीर (अ0) मुहब्बत व शफक़त के लेहाज़ से जनाब ज़ैनब के साथ तक़रीबन इमाम हसन (अ0) व इमाम हुसैन (अ0) के बराबर सुलूक करते थे। चुनानचे उस रमज़ान के महीने में जिसकी उन्नीस तारीख़ को हज़रत अमीर (अ0) के मुबारक सर पर चोट लगी है हज़रत ने शुरु महीने से अपने अफतार के दिनों को अपनी औलाद पर बाँट दिया था वह इस तरह कि एक रात इमाम हसन के यहाँ अफतार फरमाते थे, एक रात इमाम हुसैन (अ0) के यहाँ और एक रात अब्दुल्लाह बिन जाफर के मकान पर यानी अपनी बेटी जनाब ज़ैनब (स0) के यहाँ।

(इरशाद शैख़ मुफीद, पे–8 तेहरान)

कर्बला के वाक़ेए तक कम से कम पचास साल के लम्बे ज़माने में ग़ैर मामूली वाक़ेआत सामने आये और उनमें आपने ग़ैर मामूली बर्दाश्त की ताक़त को कम से कम तीन ज़िन्दा मिसालों में दिखाया। यही वह बुनियाद थी जिस पर आपके ऊँचे किरदार की वह मज़बूत इमारत बनी जिसे सख़्त से सख़्त मुसीबतें ज़र्रा बराबर भी न हिला सकीं।

मदीने से लेकर कर्बला तक हज़रत ज़ैनब हर मंज़िल में इमाम हुसैन (अ0) के साथ थीं और इसलिए कर्बला की जंग की वजहें जहाँ से शुरु हुईं और जिन नतीजोंतक पहुँचीं इन सब को हज़रत ज़ैनबे कुबरा (स0) ही की ज़िन्दगी की कहानी समझना चाहिए।

इनमें से कुछ वाक़ेआत में आपका बयान इतिहास के पन्नों में खुला हुआ नज़र आता है। चुनानचे कर्बला के बाद एक मौक़ा वह है जब बहन ने भाई की ज़बान से वह उम्मीद भरे अश्आर सुने जिनका ख़ुलासा मतलब यह है कि ज़माने का अन्दाज़ सुबह व शाम यही है कि कोई न कोई

मौत का निवाला बनता है और हर जानदार को इसी रास्ते पर जाना है।

इन अश्आर से ज़ैनबे कुबरा (स0) ने महसूस किया कि भाई अपनी सुनानी सुना रहे हैं आप बेताब होकर भाई के पास आईं और कहा हाए काश में दुनिया से गुज़र चुकी होती आज मुझे महसूस हो रहा है कि मेरी माँ का साया सर से उठा, मेरे बाप और मेरे भाई हसन (अ0) आज ही मुझ से छुट रहे हैं। आप ही तो इन सबके जानशीन हैं। इमाम हुसैन (अ0) ने बहन को सब्र की नसीहत की। जनाब ज़ैनब (अ0) ने कहाः क्यों भाई! क्या बिलकुल आप मरने पर तैयार हो गये हैं। हज़रत ने एक अरबी की मिसाल ज़बान पर जारी फरमाई जिसका मतलब यह था कि इसके सिवा कोई चारा नहीं है। यह सुन कर जनाब ज़ैनब की बेचैनी और बढ़ी और कहाः हाए ग़ज़ब! इसका मतलब यह है कि आपको ज़बरदस्ती हमसे छीन लिया जायेगा। यह कहकर अपने मुँह पर तमांचे मारे, गरीबान फाड़ा और बेहोश होकर गिर पड़ीं। इमाम किसी तरह बहन को होश में लाये और समझाने वाले अलफाज़ में बहन को सब्र की हिदायत फ़रमाकर क़सम दी कि मेरे बाद गरीबान न फाड़ना, मुँह न नोचना, और वावेला कह कर नौहा न करना। फिर बहन को ले जाकर उस जगह बिठा दिया जहाँ ज़ैनुलआबिदीन बीमारी की हालत में लेटे हुए थे। (तबरी, जि–6 पेः239–240)

अगर ग़म में और वह भी भाई का ग़म, और भाई भी इमाम और ख़ुदा का चाहने वाला। उसके ग़म में यह बातें शरीअत के हिसाब से मना होतीं तो हज़रत के लिये शरीअत के इन अहकाम को याद दिलाना काफी होता, ख़ास कर वसिय्यत की ज़रूरत न होती। लेकिन चूँकि ऐसे ग़म में यह बातें जायज़ हैं और शान के मुताबिक़ हैं। मगर हज़रत ज़ैनब (स0) को जिन हालात का सामना करना था उनमें भाई की शहादत के बाद उन पर ज़िम्मादारियाँ बहुत ज़्यादा पड़ने वाली थीं फिर बुरा–भला कहने वालों का माहौल मिलने वाला था। इसलिए हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने यह ख़ास वसिय्यत बहन को फरमाई और यह हज़रत ज़ैनब के सब्र करने का बड़ा कारनामा है कि जो सिर्फ भाई की ज़बान से शहादत की ख़बर सुनकर बेताब हो गई हों। भाई की शहादत के बाद उन्होंने अपने को ऐसा संभाला कि कर्बला से लेकर कूफा और शाम और फिर वापसी मदीने तक पहाड़ भी उनके सुकून और बर्दाश्त के सामने छोटे नज़र आते हैं।

नवीं तारीख़ मुहर्रम को जब शिम्र इब्ने ज़ियाद का ख़त लेकर उमर बिन साद के पास आया कि हमने तुमको सुलह की बातचीत के लिये नहीं भेजा है अगर हुसैन और उनके साथी मेरे हुक्म के सामने सर झुका लें और अपने को मेरे रहम व करम पर छोड़ें तो उनको ख़ामोशी के साथ मेरे पास भेज दो और अगर वह इन्कार करें तो उन पर हमला कर दो। (अलअख़बारुत्तिवाल, पे–252) और इसके बाद उमरे साद ने एक दम हुसैनी फौज पर हमला कर दिया। उस वक़्त इमाम हुसैन अस्र की

नमाज़ के बाद ख़ेमे के दरवाज़े पर तलवार का सहारा लेकर घुटनों पर सर रखे बैठे थे और आपकी आँख लग गई थी कि एक बार घोड़ों की टाप और फौज के शोर की आवाज़ जनाबे ज़ैनब के कान में गई। आप घबराकर पर्दे के पास आईं और इमाम हुसैन (अ0) को ख़बरदार किया कि देखिये दुश्मनी की फौज की आवाज़ें बहुत क़रीब से आ रही हैं आपके बाद जनाब अबुलफज़लिल अब्बास आए और उन्होंने ख़बर दी कि दुश्मन की फौज ने चढ़ाई कर दी है।

आशूर के दिन जब इमाम जाने के लिये तशरीफ लाए तो आपने हज़रत ज़ैनब ही से वह कुर्ता लेकर पहना जिसे जगह–जगह से फाड़ा था ताकि दुश्मन लूटने के वक़्त पुराना होने की वजह से शायद इस कुर्ते को न लें और लाश आपकी बिना कपड़ों के न हो।

इसके बाद हज़रत ज़ैनब कुबरा (स0) की आँखों के सामने वह मन्ज़र पेश आए जिनका ख़याल ही ख़ेमों की लूट और फिर आगज़नी और इसके बाद क़ैद इन तमाम बातों को जनाब ज़ैनब ने बड़े सब्र के साथ तय किया।

11 मुहर्रम की सुबह को जब हुसैन के बचे हुए लोग क़ैदी बनाये जा चुके और लुटा हुआ क़ाफला कूफा की तरफ भेजा गया तो क़त्लगाह से होकर गुज़रा कि जहाँ यज़ीद की फौज के मक़तूलों के दफन किये जाने के बाद ख़ुदा के रास्ते के शहीदों की लाशें बे ग़ुस्ल व बे कफन मिट्टी और ख़ून में सनी छोड़ दी गई थीं।

इस दर्दनाक मन्ज़र से बीमार व कमज़ोर अली बिन हुसैन (ज़ैनुलआबिदीन अ0) का वह हाल हुआ जिसे देखकर जनाब ज़ैनब बेताब हो गईं और कहा ऐ जाने वालों की याद यह तुम्हारी क्या हालत है कि रूह तुम्हारे जिस्म से निकलना चाहती है भतीजे ने जवाब दिया ऐ फूफी इस मन्ज़र को देखकर किस तरह बर्दाश्त करूँ कि मेरे बुज़ुर्ग बाप और चचा और भाई ग़रज़ कि तमाम अज़ीज़ व रिश्तेदारों को देख रहा हूँ कि सब बे कफन–दफन पड़े हुए हैं और कोई उनका हाल पूछने वाला नहीं है। इस नाज़ुक मौक़े पर जनाब ज़ैनब ही का काम था कि आपने अपनी बुज़ुर्ग माँ हज़रत फातिमा ज़हरा (स0) की हदीस बयान करके कि यह लाशें इस हाल में नहीं रह जाएँगी इनकी क़ब्रें बनेंगी और इन पर रौज़े बनाये जाएँगे और देखने वालों के मरकज़ होंगे। इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0) को तसल्ली और दिलासा दिया।

इसके बाद कूफे के बाज़ार से जब आले रसूल का लुटा हुआ क़ाफला इस बेकसी के हाल में गुज़र रहा था जिसको देखकर पत्थर का दिल भी पिघल जाता और कूफा के बाज़ार में हर तरफ कोहराम मच गया तो बशीर बिन हज़ीम असदी नक़ल करते हैं कि इस वक़्त ज़ैनब बिन्ते अली ने भीड़ की तरफ चेहरा किया और तक़रीर शुरु की मैने कभी एक पर्दा करने वाली को आपकी तरह ज़ोरदार तक़रीर करते न सुना था बस मालूम होता था कि आपकी ज़बान से आपके बुज़ुर्ग बाप हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) बोल रहे हैं। आपने लोगों की तरफ ख़ामोश रहने का इशारा

किया जिससे हर तरफ ख़ामोशी छा गई आपने फरमाया–

तारीफ के लायक़ अल्लाह है और सलात व सलाम मेरे बुजुर्ग मुहम्मद मुस्तफा (स0) और उनकी इज़्ज़त के साथ ख़ास है। ऐ इब्ने कूफा! ऐ धोका और फरेब करने वालों! तुम रोते हो! ख़ुदा करे तुम्हारे आँसुओं को थमना नसीब न हो। और तुम्हारी नौहे और फरियाद की आवाज़ों में सुकून पैदा न होने पाये। फिर आपकी तक़रीर का सिलसिला जारी रहा यहाँ तक कि आपने फरमाया क्या तुम लोग सचमुच आँसू बहा रहे और चीखें मार–मार कर रो रहे हो? हक़ीक़त में तुम्हारे लिये यही बेहतर है कि ज़्यादा रोओ और कम हंसो। तुमने समझने की कोशिश भी की कि किस तरह तुमने ख़ुदा के रसूल के जिगर को चाक किया उनके पाक घर वालों को बेपर्दा किया और उनकी बेइज़्ज़ती की। क्या तुमको इस पर ताज्जुब है कि आसमान ने ख़ून बरसाया तो कुछ नहीं, आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त होगा और उस वक़्त तुम्हारा कोई मदद करने वाला न होगा। इस कुछ रोज़ की ढील से ख़ुश न होना। ख़ुदा को जल्दी करने ज़रूरत ही नहीं इसलिए कि उसको मौक़ा हाथ से जाने का डर नहीं बेशक वह तुम्हें एक वक़्त तक तुम्हारे हाल पर छोड़े रहेगा। रिवायत करने वाला लिखता है कि आपकी दिल हिला देने वाली तक़रीर के दौरान में मेरे आसपास तमाम सुनने वालों ने बेचैनी की हालत में दाँतों में उंगलियाँ दबाए रो रहे थे और एक बुढढे को मैंने देखा वह कह रहा था कि ''मेरे माँ–बाप तुम पर क़ुर्बान! तुम्हारे बूढ़े तमाम दुनिया के बूढ़ों से, तुम्हारे जवाब तमाम जवानों से तुम्हारी औरतें तमाम औरतों से और तुम्हारी नसल तमाम नसलों से अफज़ल व बेहतर है न वह कभी ज़लील की जा सकती है न बेइज़्ज़त।

इसके बाद इब्ने ज़ियाद के दरबार का पड़ाव आया। आपके चारो तरफ कनीज़ें घेरा बाँधे हुए बैठी थीं। इब्ने ज़ियाद ने पूछा यह कौन औरत है, तीन बार उसने पूछा कि आख़िर एक कनीज़ ने यह कह दिया। अरे यह ज़ैनब बिन्ते फातिमा हैं यह सुनकर इब्ने ज़ियाद ने जो कामियाबी और जीत के नशे में चूर था आपको बताते हुए कहाः

ख़ुदा का शुक्र है कि उसने तुम लोगों को बेइज़्ज़त किया, तुम्हें क़त्ल किया और तुम्हारे झूठ को सामने ला दिया। (तबरी, जि–6 पे–262)

''तुम लोगों'' के ख़िताब के साथ इस जुमले में है कि ''तुम्हारे झूठ को सामने ला दिया'' बड़ी गहराई थी। इसमें रिसालत व वही और क़ुर्आन व हदीस सबका इनकार छुपा था। यह इस्लामी उसूल पर हमला था जिस पर हज़रत ज़ैनब ने ख़ामोश रहना अपनी लिये ठीक न जाना। फरमायाः

तारीफ है उस ख़ुदा के लिये जिसने हमको इज़्ज़त दी मुहम्मद मुस्तफा (स0) के साथ और हमें पाक व पाकीज़ा बनाया। उस तरह जो हक़ है पाकीज़ा बनाने का न वह कि जो तू कहता है बेइज़्ज़त होता है जो फासिक़ व फाजिर है और झूठ इसका यक़ीनन है जिसके सामने हमेशा

सच्चाई न रहे और वह हम नहीं हमारा ग़ैर है।

अगर ग़ैरत होती तो इब्ने ज़ियाद को चुप हो जाना चाहिए था मगर वहाँ तो हुकूमत का नशा था और सलतनत का घमण्ड था। कहने लगाः ''देखा तुमने! अल्लाह ने तुम्हारे भाई और दूसरे रिश्तेदारों के साथ क्या किया?''

जनाब ज़ैनब ने बड़े सुकून और इत्मिनान के साथ जवाब दियाः

''मैंने अच्छा ही देखा। वह ख़ुदा के ख़ास बन्दे थे जिनके लिये शहादत का दर्जा तक़दीर लिखने वाले ने लिख दिया था। और वह अपने पैरों पर चलकर कुर्बान होने की जगह तक गये और वह दिन भी दूर नहीं जब ख़ुदा के सामने तेरा और उनका मुक़ाबला होगा और तुझको अपनी करतूतों पर जवाब देना होगा।''

फिर आख़री मारके में यज़ीद का दरबार था। जब भरे हुए दरबार में यज़ीद ने वह कुफ्रिया अश्आर पढ़े–

यानी काश मेरे जंग बद्र वाले बुज़ुर्ग ज़िन्दा होते और देखते कि मुहम्मद के दीन की मदद करने वाले किस तरह नेज़ों के पड़ने से घबरा गये हैं। तो वह इस हाल में ख़ुश होकर दुआएँ देने लगते। बनी हाशिम ने हुकूमत हासिल करने का एक खेल खेला था, हक़ीक़त में न कोई ख़बर आई थी और न कोई वही नाज़िल हुई थी।

यह सुनना था कि हज़रत ज़ैनब खड़ी हो गईं और आपने वह तक़रीर की जिसने यज़ीद की इज़्ज़त व सरदारी की तमाम बुनियादों को खोखला कर दिया।

आपने फरमाया कि कितना सच्चा है मेरे ख़ुदा का फरमान कि आख़िर में उन लोगों की जो बुरे काम करते हैं यह हालत हुई कि वह ख़ुदा की आयतों को छुठलाने और उनकी हंसी उड़ाने लगे। तूने ऐ यज़ीद यह सोंचा है कि तूने हमको इस हाल तक पहुँचा दिया है और क़ैद करके अपने सामने बुलाया है तो इससे हमारी हक़ीक़त में बेइज़्ज़ती हो गई! .... क्या तू भूल गया, ख़ुदा के इस फरमान को कि वह लोग यह न ख़याल करें जिन्होंने कुफ्र को चुन रखा है, कि हम उनको ढील देते हैं वह उनके लिये किसी अच्छाई की वजह होगी। हम उनको सिर्फ इसलिए ढील देते हैं कि वह ख़ूब दिल खोलकर गुनाह कर लें आख़िरकार तो उनके लिये बहुत बुरी सज़ा ही है (तक़रीर करते हुए आपने फरमाया) अब तू अपने शिर्क करने वाले बुज़ुर्गों से तारीफ करवाना चाहत है, घबरा नहीं थोड़े दिनों में तू भी उनके पास पहुँचेगा............!

आख़री अलफाज़ यह थे कि शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने हमारे बुज़ुर्गों को शहादत के अन्जाम और रहमत के साथ मिलाया और वही हमारे लिये काफी और बेहतरीन मदद करने वाला है।

फिर बहुत दिनों के बाद जब क़ैद से रिहाई हुई तो ज़ालिम की राजधानी में मज़लूम का मातम करना भी आप ही का कारनामा था। मदीने में वापसी के बाद आप एक साल से ज़्यादा ज़िन्दा न रहीं और फिर वफात पा गईं।

□□□

एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

ईश्वरत्व और ईश्वरीय दूतवाद

'ईश्वरत्व' का अर्थ यह है कि ईश्वर ने प्रत्येक अस्तित्व में मंज़िले कमाल (संपूर्णता) तक पहुँचने की क्षमता दी है और प्रत्येक वस्तु अपनी संपूर्णता (कमाल) की इच्छुक है। सूर—ए—'आला' में अल्लाह ने फरमाया है, ''ईश्वर ही वह है जिसने प्रत्येक वस्तु को बिलकुल ठीक—ठाक बनाया। हर चीज़ की पराकाष्ठा को नियत किया और स्वभाविक रूप से उसकी ओर निर्देश दिया।''

सूर—ए—'ताहा' की 52वीं आयत है, (जनाब मूसा) ''मेरा ईश्वर वह है जिसने प्रत्येक चीज़ को (उसके औचित्य के अनुरूप) सृष्टि प्रदान की, फिर उसके स्वभाव का निर्देशन भी कर दिया।''

हर चीज़ में पूर्णता की क्षमता प्रदान करना और उसकी सिद्धि के लिये स्वाभाविक रुजहान बेकार था अगर वह साधन और वातावरण उपलब्ध न होता जिसके बिना पूर्णता के स्तर तक पहुँचना सम्भव ही नहीं होता। जैसे गुठली में क्षमता है कि वह पेड़ बनकर फले—फूले मगर कब! जब ज़मीन उपयुक्त हो, जड़ों तक पानी की तरी पहुँचे, सूर्य की किरणें सन्तुलित रूप से गर्मी पहुँचायें। वातावरण में हाइड्रोजन हो जो जीवन सामग्री दे। और ईश्वर ने इन सब चीज़ों की व्यवस्था कर दी।

अल्लाह, ब्रह्माण्ड का ईश्वर है तो क्या मनुष्यों का ईश्वर नहीं है! अगर इन्सानों का भी ईश्वर है और निश्चय ही है, तो क्या वह उसमें छिपी हुई असीमित क्षमताओं की पूर्ति और उसके अन्दर अथाह शक्तियों की जागृति की व्यवस्था नहीं करेगा! मनुष्य के पाँव टिकाने के लिये ज़मीन का फ़र्श है। प्यास बुझाने के लिये पानी है। आहार के लिये फलों से लदे पेड़ हैं, लहलहाते खेत हैं। शिकार की रुचि की पूर्ति के लिये पशु हैं, पक्षी हैं। साँस लेने के लिये हवा है। मतलब यह है कि शरीर की पूर्णता के लिये जिन चीज़ों की आवश्यकता थी वह सब ईश्वर ने उपलब्ध करा दीं। परन्तु इन्सान मात्र काया का नाम नहीं। इस काया में छिपी हुई आत्मा भी है। इसकी भी कुछ माँगें हैं, कामनाएँ है। आत्मा का तक़ाज़ा है 'शील' और आचार की 'बुलन्दी' आत्मा का आहार है, 'ज्ञान'। उसकी पूर्ति का माधयम है, त्याग और बलिदान। शरीर ख़ूराक पाकर विकसित होता है और आत्मा दूसरों को खिला के प्रफुल्लित होती है। सौन्दर्य की ओर रुजहान, पराकाष्ठा की ओर झुकाव, यह सब आत्मा के तक़ाज़े हैं। और ईश्वर ने शरीर के विकास और पूर्णता का प्रबन्ध किया तो आवश्यकता थी कि आत्मा की क्षमताओं और

नफ़्स को पूर्णता की सीमा तक पहुँचाने की व्यवस्था करे। और इस उद्देश्य से ईश्वर ने पैग़म्बर भेजे, ग्रंथ अवतरित किये और शरीअतें (धर्म विधियाँ) भेजीं।

कुछ लोगों का विचार है कि एक समय वह था जब इंसान का ज्ञान बहुत सीमित था। अपने अच्छे–बुरे को पहचानने की सलाहियत (क्षमता) न रखता था। नीक–विकार बूझने का विवेक न था। भ्रान्तियों के संसार में रहता था। मतलब यह है कि जब मानव जाति शिशु अवस्था में थी तब धर्म ने मानव को बनाने और संवारने और मानव जाति को आगे बढ़ाने में बड़ी अच्छी भूमिका निभाई थी। लेकिन हर बात का एक वक़्त होता है। वह चीज़ जो किसी युग और परिस्थिति विशेष में लाभकारी होती है, परिस्थितियाँ बदलने के बाद हानिकारक भी हो सकती हैं। अब दौर बहुत कुछ बदल चुका है, समय आगे बढ़ चुका है। इंसानी जानकारी का क्षेत्र विशाल हो चुका है। अब वह पृथ्वी को ब्रह्माण्ड का केन्द्र नहीं, ब्राह्माण्ड की एक साधरण आकाश गंगा के, एक छोटे से सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने वाला, बहुत ही छोटा नक्षत्र समझता है।

इंसान की यात्रा सीमा ऊँटों और घोड़ों से अधिकाधिक कुछ सौ किलोमीटर थी। अब वह अन्तरिक्षों का यात्री है। अब वह शायद चाँद को देवता न समझे। उसके क़दम चाँद की धरती को रौंद चुके हैं। अतः इस विकसित युग में धर्म पूर्णता की ओर ले जाने के बजाये इन्सान को प्रतिक्रियावादी बनाता है। उसकी प्रगति में रुकावट ही नहीं पिछले पाँव बीते युग की ओर पलटाने का कारण बनता है।

ऊपरी तौर पर तो देखने में यह बात मन को छूती है, परन्तु पूरा ध्यान दिया जाये तो प्रत्येक न्याय प्रिय स्वभाव रखने वाला यही फैसला करेगा कि जैसे हज़ारों वर्ष पहले धर्म आवश्यकता थी उसी तरह आज भी पैग़म्बरों की रहनुमाई आवश्यक है। यदि पैग़म्बर डाक्टर बनाने, वैज्ञानिक ढालने, इंजीनियर रचने के लिये भेजे गये होते तो उनकी शिक्षाओं की आवश्यकता न रहती। लेकिन वह सुशीलता सिखाने, आचार बनाने, नफ़्स की प्रगति और आत्मा की पूर्णता के लिये आते रहे हैं।

आज जबकि नये–नये आविष्कारों, भौतिकता की प्रगति और कृत्रिम प्रकाश ने आदमी की आँखों में ऐसी चका–चौंध पैदा कर दी है कि अब वह आत्मा की तलब और मन के तक़ाज़ों से बिलकुल असावधान हो गया है। नैतिकता के ह्रास में दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी होती जा रही है। घातक से घातक हथियारों का आविष्कार, दूसरों पर श्रेष्ठता और वरीयता का भाव, सकल संसार के धन–दौलत पर अधिकार जमाने की लालसा, पर राष्टों को गुलाम बनाने, राज्यों पर अधिकार जमाने की स्पर्धा ने उसको अन्धा बना दिया है।

(जारी)

ज़ैनबः बदलते हुए बोलते तेवर

मु0 र0 आबिद

अन्धा बहरा गूँगा लुन्ज अपाहिज (किया हुआ) इतिहास...'राज' धारा का दूध पिलाया, ताज तिगड़म का पाला, साम्राज्य दृष्टि का बन्धा टिका परकटा इतिहास, बुद्धजीवी धर्म के नाम पर सबसे बड़ा बुद्धिभक्षी ज्ञान–तोड़ धबेला भद्दा इतिहास... वह जिसकी लेखनी बिकी हुई, संवेदना जमी हुई, बोध लगाम कसा, बहाव राजहड़प पैरों का रौंदा... वह इतिहास अगर दरबार और महल के बाहर झांके भी तो, हलचल, उधम और विद्रोह छोड़ उसे कुछ न दिखाई दे (उधम के अन्धे को हलचल ही हलचल दिखाई दे।) उस इतिहास की आँख शिष्टाचार, संयम की मूर्ति, शान्ति घूंघट में पर्दे की प्रतिमा हज़रत ज़ैनब (स0) पर पड़ती भी कैसे!! (सूरज भी तो ज़ैनब की एक झलक न देख सका, बाहरी दीवार तक को ज़ैनब की आहट भनक न लगी।) वह तो अपनी माँ स्वर्ग की (पर्देवाली) स्त्री (जनाब सैयदा स0) के पर्दे के उस मानक की थी जहाँ नामहरम (अन्य मर्दों) की आँख से बचना और उनसे अपनी आँख बचाना ध्येय हो, मर्यादा और सुहाग के आंचल की बसी इस बेधब्बे आंचल वाली पाक बीबी की झलक, भनक या आहट तक इतिहास की आँख, कान और बोध की पहुँच का क्या सवाल!! यह भी ध्यान में रहे कि ज़ैनब अपने बाप की पच्चीस बरस की राजनैतिक चुप्पी और बुद्धजीवी तटबास की पाली हुई हैं। वह बाप जो अपने समय के संसार के सबसे बड़े राज का प्रमुख भी हुआ लेकिन 'राज' की बू और साम्राज की बास को जिसने अपने फैली हुई सीमाओं में आने तक न दिया और जिसने 'महल' की हवा को अपने आंगन में झांकने तक दिया (यानि इतिहास को चाव लेने आ अवसर और मनोरंजन का मज़ा न लेने दिया) उस बाप के नियम–संयम में पूरी तरह ढली, शान्तिधारा में बसी, दिखावे से परे बेटी साम्राज और राजनीति के मारे इतिहास को अपने दीदार से लेजाने क्यों लगती। पर जो भी हो, ज़ैनब इतिहास में आ ही गई (लाई गई) और बहुत बड़े रचनात्मक धमाके (Big-Bang) के साथ। ज़ैनब आई, तो इतिहास के धारे को मोड़ गई उसके सत्ताभाव को तोड़ गई, बल के घमण्ड का बल निकाल गई, काल ढल गई। बात केवल यह थी कि ज़ैनब के बोल इतिहास तक पहुँच ही गये और बोल के बदलते तेवरों से –'वादी चकरा गये, इतिहास अचेता चित हो गया'। वे तेवर जो इन्क़िलाब की फसल लगा गये, उगा गये।

ज़ैनब बोलीं तो निर्मलता–केन्द्र माँ की भाषा बोली, नहजुल बलाग़ा (प्रसंगिता–शैली)[1] के प्रवक्ता बाप का लहजा बोला, संचार–चमत्कार नाना की आत्मा बोली, सत्य–रक्षक दादा की धाक बोली, शान्ति, सत्य, यथार्थ के नायक भाईयों की शैली बोली, साम्राजिकता के उचके हुए इस्लाम की कुमुक उठी, दबी दबाई मानवता के जान में जान आई।

(ज़ैनब के यह बदलते तेवर पिघलते चलन की उपज न थे बल्कि चरित्र के और स्वभाव की स्थिरता की पहचान थे।) आईये, इन बोलते तेवरों

(1) हज़रत अली के व्याख्यानों–प्रवचनों, पत्रों और सूक्तियों का एक संग्रह

के बदलते कोणों पर एक आँख डाली जाएः

पहला अंक– कर्बला की शोक रचना के नाम

कर्बला का बन... दिन भर के दुखों और बहत्तर चमकते ख़ून में बसा माहौल – सन्नाटा, सुनसानी... एक ओर जले तम्बुओं से उठता धुवाँ... एक ओर अत्याचार के थके हारे खिसयाने नाच का उधावन... ऐसे में अलग एक कोने में एक दुखियारी, पीड़ाओं की मारी बन्दी, बेचादर कुछ बन्दियों अपने सगों के शोक झुरमुट में धरती पर बैठी कुछ दबे होंटों कहती है। (अब तो ज़ैनब के दबे होंठों के बोल भी सुने जा सकते हैं) अपने नाना से कहती है, गुहार करती है, सहनशीलता की प्रतिमा अपना रोना नहीं रोती, भाई की शोक–रचना कहती हैः–

**हाय मुहम्मद स0! आप पर तो आकाश के फरिश्ते (देवता) सलवात भेजते हैं, वरदान देते हैं, और यह आपका हुसैन है अंग अंग टूटे टूटे छिटके पड़े हुए... आपकी बेटियाँ बन्दी... हाय मुहम्मद!*

यह हुसैन (अ0) चटयल बन में पड़ा जिस पर हवा धूल की चादर उढ़ाए हुए है। यह पापी दुराचारी नारियों के कुपूतों का हत्या किया हुआ है, हाय दुख! हाय कसक! ऐ हुसैन! आज तो अल्लाह के रसूल (दूत) नाना मारे गये। ऐ मुहम्मद (स0) के (भले) साथियों! ये सब तो मुहम्मद की सन्तान हैं जो युद्धबन्दियों जैसी फिराई जा रही हैं...

देखिये, ज़ैनब के इन बोलते तेवर में शोक में डूबा आँखों देखा हाल है, बेहाली का बोल है, आँसुओं की तपन है, सहन की चमक है, दुखों की खटक है, कसक है फिर भी शान्ति है कल है, याद है, याद का आधार है।

दूसरा अंक– बाज़ार के उधार का उतार

अब दृश्य बदलता है, अन्याय उत्पीड़न नई करवट लेता है। (नया इतिहास उभरने को मचलता है) कूफा का भरा बाज़ार... दुख हाट... भीड़ की उधाचौकड़ी, भेड़िया मण्डी... अपने पराये आये बुलाये सब...सबके सब अन्याय अत्याचार के साथी, बल के समर्थक, नहीं तो कम से कम बल के नगें नाच के मूकदर्शक (जो नहीं वे अन्धेर की जेलों में राजनैतिक अति की ढली मोटी खोटी सलाख़ों के पीछे) ऐसे में ज़ैनब का स्वतन्त्रा संग्रामी बन्दी दल... रस्सी में जकड़ा, ऊँट की नंगी पीठ पर सवार... नेजों पर चढ़े कटे सरों के जुलूस के साथ बाज़ार पहुँचता है।... यह सर अधिक्तर कूफे वासियों के हैं जिनको यह गलियाँ सड़कें पहचानती हैं... यानी इन सरों से बन्दी दली की पहचान आसान... यहाँ ज़ैनब के बोल फूट पड़ते हैं: लोगों के करतूत बताने को, अत्याचार का अपराध जताने कोः

ऐ कूफे वालो! तुम रोते हो!! (रोते भी रहो) तुम्हारे आँसू कभी न थमें! तुम्हारी गुहार कभी न टूटे! (मिसाल में कुर्आनी आयत पढ़कर) तुमने भी अपने प्रण तोड़ दिये, अपनी बात से मुकर गये (ज़बान से फिर गये) और अपने मूल नास्तिकता की ओर पलट फिरे। तुममें

* ज़ैनबे के बोल अरबी भाषा में हैं। उनके उर्दू अनुवाद इस लेखक के सामने हैं। यहाँ इन अनुवाद को सरल भाषा में बदला गया है। यदि अनजाने में या अनजाने से अनर्थ हुआ तो अल्लाह क्षमा करे। जानकार लोगों से प्रार्थना है कि यहाँ या किसी भी त्रुटि कमी से अवश्य अवगत कराएँ। आभारी रहूँगा।

बे पर की उड़ाने, अपनी अपनी बघारने, बैर, झूठ, दासियों की चापलूसी और शत्रु जैसे लान्छन लगाने को छोड़ दिया है। तुमने आख़िरत (परलोक) के लिए बहुत बुरा सामान भेजा है। अल्लाह का प्रकोप तुम्हारे लिए है, तुम सदा के लिए अज़ाब दण्ड भुगतोगे।... रोते हो?! बहुत ही रोओ, कम हंसो (हंस कम सको)! (क्यों) तुमने नबूवत (प्रभुसमाचार माध्यम) की मुहर के वंशज, रिसालत (ईशदूतत्व) की खान को मार डाला है (वह) जो लड़ाईयों में तुम्हारा आसरा, तुम्हारी एकजुटता का सहारा, तुम्हारी शन्ति चैन का ठिकाना, तुम्हारे बोल की आस, तुम्हारे आड़े समय आड़े आने वाला, तुम्हारी बातचीत के लिए परामर्शी, तुम्हारे तर्कों का स्रोत, तुम्हारे रास्तों की मीनार (प्रकाश–स्तम्भ/Light House)... (तुमने क्या कर डाला!) क्या ही बुरा तुमने अपने लिये किया (बहुत बढ़ गये, क्या बुरे फंस गये) जिस दिन तुम उठाये जाओगे (क़यामत में) उस दिन के लिए क्या बुरा बोझ उठा रखा है। तुम्हारी नास, तुम्हारी औंधे मुँह गिरन!! क्योंकि तुम्हारे जतन अकारत हुए तुम्हारे हाथ कटे और तुम कंगाल हुए।

तुमने तो वह किया कि आकाश फट न पड़े, धरती चिटक न पड़े...

... (भगवान की ओर से) अपनी ढील छूट पर इतराओ न। उसे जल्दी की क्या पड़ी... प्रभु तुम्हारी ताक में है (उस से बचकर जाओगे कहाँ?)

देखा! बोलते तेवर का रेतीला ढब... सामने अन्याय अत्याचार है और उसके साथी बराती घराती। इनमें अपराध का जताना है झिड़क है, चिथाड़ है, फटकार है, (देखिये, अभी से पिट्टस, मच गई! इसी से कहीं दबी कोई चिंगारी निकलकर बढ़कर क्रान्ति इन्क़िलाब की ज्वाला में बदल रहीं)

तीसरा अंकः अंधेरे के सोते पर सीधा प्रहार – मार ही मार

फिर तो जुल्म अन्याय आगे बढ़ जाता है (अपनी इस फिटकार से ऊब कर और ठिकाने देखने या अपने ठिकाने तक पहुँचने, अपने ठिकाने लगने) ज़ैनब के सहनशील सत्यदल को आगे बढ़ाता है और किसी न किसी तरह अन्धेर सोते तक पहुँचा देता है (कितनी जल्दी अपने डॉन गुरुघन्टाल का पता बता ही नहीं देता उस तक पहुँचा भी देता है। देखा अत्याचार का पेट कितना कच्चा होता है!)

अब दृश्य पूरी तरह बदला है। कर्बला अत्याचार की कार्यशाला या Shooting Ground थी, कूफा अत्याचार के कलंकी कलाकारों और कर्मियों का भर्ती आफिस, जमघट या Studio था और यह शाम जुल्म अन्याय का मुख्यालय Headquarter है, अन्धेर के भारों का जमावड़ा या Black Hole।

यह बोलते तेवर चिताने चिथाड़ को नहीं, सीधे प्रहार को अपनाते हैं, जुल्म से सीधी टक्कर लेते हैं, अत्याचार को धाराशायी चित्त करने को। देखिये, इन तेवरों की जीवटी, अत्याचार के सारे कसबल और सत्ता के सामनेः

अल्लाह ने सच कहाः 'फिर तो करतूतियों कुकर्मियों को जो अल्लाह के प्रतीकों को झुटलाते हैं और उनकी खिल्ली उड़ाते थे, उनका बुरा परिणाम हुआ'

ए यज़ीद! तूने हम पर धरती के रास्ते, आसमान के क्षितिज (Horizons) बन्द कर दिये और बन्दी कर फिराया।

तो क्या समझता है अल्लाह के यहाँ हम गिर गये, नीच हो गये और तू बड़ा हो गया, बढ़ गया। तू इस फेर में अकड़ू घूर रहा है, ख़ुशी के मारे बाहें इतरा–इतरा कर कूल्हे मटका (Twist कर) रहा है... जल्दी न कर! कुछ थम तो सही...

ऐ छुट्टे छोड़े हुए दासों की सन्तान! तूने रसूल की बेटियों को बन्दी किया, उनके मान को मिटाया, उन्हें बेपर्दा किया ... उससे मुँह देखे की भी क्या आशा बन्धे जिसके पुरखों ने पाक लोगों का जिगर चबाया हो और जिसका माँस चमड़ी, शहीदों की पाक सन्तान के ख़ून से पली पोसी हो... (तू अपने पुरखों से चाहता है तेरी पीठ थपथपाएँ) तू बहुत जल्दी... अपने पुरखों से मिलने वाला है. ....तू (क़यामत के दिन) रसूल के आगे अपराधी की तरह लाया जायगा... फिर ईश्वर का न्याय, रसूल मुहम्मद (स0) की दावेदारी और जिब्रील की पैरवी तेरे (दण्ड के) लिए बहुत है। फिर तो तुझे और उसे जिसने तुझे मुसलमानों की गर्दनों पर थोपा है, बहुत जल्दी मालूम पड़ जाएगा कि अत्याचारियों को कैसा बदला (दण्ड) मिलता है और किसका ठिकाना बुरा है और किसके साथी ढीले हैं। .....इस तरह तेरे मुँह लगना मेरे लिए खेद की बात है।

अब ज़ैनब अत्याचार पर अन्तिम अचूक प्रहार करती हैं। जग समझे हुए सूझबूझ वाली ज़ैनब, बेपढ़ाये हुए पढ़ाने वाली ज़ैनब, दर्शन की आँख से अन्याय अत्याचार के कसबल जांचे परखे समझे, सताने के छोटे धुकधुकाते दिल की फुदक का अनुमान किये ज़ैनब अनोखी ललकार देती है:

यज़ीद जितना धोका देना है दे ले, अपने छलबल, जतन से ऊब न, जितना सताना है सता डाल लेकिन याद रख तू हमारी याद हमारी चर्चा को मिटा नहीं सकता. .. तेरे दिन तो गिनती के हैं (हमारे दिन अनन्त हैं)...

देख लिया। दर्शन भरे जियाले बोलते तेवर के बेबाक बहाव, काट, बाढ़, उठान, विश्वास, ईमान, ... जिसने अत्याचार को उसका भाग्य दिखा दिया, मात का हार गले डाल दिया और यह भी जता दिया सत्य सहनशीलता की बात कितनी बड़ी होती है। इन तेवरों के सटीक निशाने का चमत्कार देखिये कि यज़ीद जल्दी ही पछतावे जैसी हूक में जल मरा (यहाँ इस फेर में न रहिये कि यज़ीद का पछतावा सच्चा था। नहीं तो वह 'सत्य' के केन्द्रों मदीना मक्का तक धावा न बोलता। उसने केवल हुसैन अ0 के आगे अपनी हार मानी। सच में यह ज़ैनब के समक्ष उसका इक़बाली बयान था कि बीबी अब तो पीछा छोड़ दीजिये।)

चौथा अंक: देस वापसी–आपबीती बिपता

अब संसार भर की कठिनाइयाँ सहे, कड़े संकटों में आड़े तूफान झेले, चलती फिरती सुनानी बनी, दुखयारी बीबी ज़ैनब अपने देस वापस होती है, भरे दिल, बोझल मन, छलनी जिगर और ख़ून रोती आँखों के साथ। दिलासे की प्यासी ज़ैनब के बोलते तेवर अब बस दुख बताने, विपता कहने तक सिमट जाते हैं। सोग में डूबे यह तेवर शोक रचना करते आँसुओं से उपदेश देते हैं। (हुसैन (अ0) के बाद अब ज़ैनब बड़ी हो गई, अपने घर घराने में और अपना बड़कपन कर्बला से कूफ़ा और कूफ़े से शाम तक निभा भी चुकी):

ग्रन्थ (कुर्आन) से जुड़े रहो और जो इसको पढ़ता है, (हम) अहलेबैत ही ग्रन्थ वाले हैं। मेरे इमाम (धर्मनायक नेता हज़रत अली अ0) ने बचपन की उस आयु में ईश्वर को एक (कहा) जब लोग ठीक से बोल नहीं पाते।

.....(क़यामत में) प्रभु के सामने नबी (मेरे नाना) और वसी अबुतुराब–धरतीपिता (मेरे बाप) मेरी शिफ़ाअत सिफारिश करने वाले होंगे।

.........तफ़ और उसके वासियों पर सलाम और उन समाधि कलशों पर जिन पर प्रभुकृपा होती रहती है। ....तफ़ (कर्बला) में वे पुण्यात्माए सो रहे हैं जिन्होंने जीवन भर (अल्लाह की) भक्ति पूजा तपस्या की, फिर इन बनो घाटियों में सदा को सो रहे। ....यह लोग दीन दरिद्र, भूखे, मरिहल लोगों के लिए सरोवर हुए, अब 'अदन' (स्वर्ग) के बाग़ों की ओर चल बसे। ....ऐ मुहम्मद (स0)! आपकी बेटियाँ बन्दी की गईं ....फिराई गयीं..... रूम के नास्तिक युद्धबन्दियों जैसी..... उनके आंचल मैले धूल भरे थे और चेहरे खुले हुए थे और बरछियों की नोकों (के चुमने से) ख़ून भरे ....हुसैन (अ0) के लिए फ़ुरात (नदी) के पानी की कन्जूसी की गई जो कुत्तों तक के लिए बे रोक टोक था। मेरा मन हुसैन (अ0) के दुख में भुन रहा है और मेरी आँखें उन पर बराबर आँसू बहा रही हैं।

यहाँ बोलते तेवर में शोक रचना बोल रही है, आहें सांस ले रही हैं, सोग का वेग है, रोने की बिलबिलाहट है, दिलासे का बहाव है, टीसन है, तपन है, जलन है, कसक, खटक, चोट है।

अंकों का केन्द्र–बिन्दु

इन बदलते तेवरों के पीछे क्या है?! कुछ देखिये। सामने की बात है सामने के दृश्य बदले, वातावरण बदला, समय दशाएँ बदली, तो तेवर बदले। क्रिया के अनुसार प्रतिक्रिया (Reaction) होती है। तेवर न बदलते तो बोध संवेदना का हल्कापन या आचरण का बिखराव समझा जा सकता था। लेकिन यहाँ आगे बनने वाले प्रभावों से पता चलता है कि बोलते तेवर अवसर और स्थिति को पहचानते हुए बदले, बोध संवेदन के इशारों पर बदले। ये तेवर परिस्थितियों का अनुबोध और अनुमान रखने वाले थे और इतिहास धारा को समझने वाले थे बल्कि उन्हें अपने अनुसार मोड़ लेने की भरपूर क्षमता और सकत रखने वाले प्रभावी कलाकार थे। इन बदलते बोलते तेवरों से व्यक्तत्व की एकाग्रता और युग प्रवर्तक चरित्र उभरता है जो एक झटके से इतिहास में आया, ठहरा और अपने अनमिट अनन्त निशान छोड़ चला जो आगे आने वाली पौधों (Generations) का मार्गदर्शन करते, पालते पोसते रहे।

सलाम बदलते हुए बोलते तेवरों के एकढब, एकरंग जगमगाते चरित्र पर, उसकी डगर, उसके विचार, उसकी दृष्टि पर।

सलाम बदलते हुए बोलते तेवरों के इन्क़िलाबी (क्रन्तिकारी) घोल पर, युग बनाते काढे पर सलाम। सलाम इससे सुधरती मानवता पर।

सलाम बदलते बोलते तेवर के बदलते कोणों पर, इन कोणों में पलते दृष्टिकोणों पर और प्रभावमय दृष्टि पर।

सलाम बदलते बोलते तेवरों के अवसर, बोध, दृश्य–पहचान प्रदर्शन पर, सुधार की दुर्लभता को सलाम, प्रणाम, नमन।



इदारा

मुख्य समाचार

अज़ादारी लेना है या तबर्राः मौलाना कल्बे जवाद साहिब

लखनऊ। क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहिब ने तारीख़ी आसफी मस्जिद में एक बड़े मजमे के सामने तबर्रा के मतलब को साफ करते हुए कहा कि यह क़ुर्आनी लफ्ज़ है जिसके मानी अलग होने और दूरी इख़्तियार करने के हैं यानी हर उस किरदार से दूरी इख़्तियार करना जहाँ बुराई और ख़राबियाँ पाई जाती हों। मौलाना ने कहा कि लानत से तबर्रा का कोई ताल्लुक़ नहीं है लेकिन लानत अपनी जगह ख़ुद ढूँढ लेती है अगर झूठों पर लानत भेजी जा रही है तो चाहे भेजने वाला भी अगर झूठा होगा तो उस पर भी लानत होगी। मौलाना ने क़ौम से ख़िताब करते हुए कहा कि बिन्ते रसूल ने अपने बाबा से यह सवाल नहीं किया था कि दुश्मनों का तबर्रा कौन करेगा बल्कि यह सवाल किया था कि मेरे बच्चे पर रोएगा कौन? इसलिए अब फैसला करना है कि अज़ादारी लेना है या तबर्रा। और यह इस्लाम का उसूल है कि अहम चीज़ को आगे रखा जाता है और कमतर चीज़ को छोड़ दिया जाता है मौलाना ने मिसाल देते हुए कहा कि नमाज़ सबसे बड़ी इबादत है लेकिन अगर किसी की जान ख़तरे में हो तो उसको बचाना वाजिब है और नमाज़ को छोड़ना ज़रूरी है क्योंकि इन्सानी जान बहुत क़ीमती है।

मौलाना ने शीआ और सुन्नी दोनों फिरक़ों के लोगों को पैग़ाम देते हुए ख़बरदार किया कि साज़िशों को समझने की कोशिश करें। इत्तेहाद को तोड़ने वाले जिनका ताल्लुक़ शहर की गली और कूचों से दुनिया की बड़ी ताक़तों तक होता है कुछ वह मामूली लीडर होते हैं जो अपने को आगे लाने के लिए इस तरह के फसाद करवाते हैं एक तबक़ा सियासी जमातों का है और एक तबक़ा वह जो इस्लाम दुश्मन मुल्कों जो मुसलमानों को एक नहीं देख सकते इसलिए अपने आपको बाक़ी रखने और मुसलमानों की बढ़ोत्तरी और तरक़्क़ी के लिये गली मोहल्ले के मामूली लीडरों से लेकर दुनिया की बड़ी ताक़तों की साज़िशों पर भी नज़र रखना है। मौलाना ने कहा कि हमें इन तीनों तबक़ों के साथ अवाम पर भी नज़र रखना होती है जो इन साज़िशों का शिकार होते हैं। मौलाना ने क़ुर्आन की आयतों के ज़रिये पैग़ाम दिया कि क़ुर्आन ने हमें आईना दिखाया है ''लोगों की अक्सरियत जहन्नम में जायेगी हमने उन्हें अक़्ल दी है वह सोचते नहीं हैं, आँखें दी हैं देखते नहीं हैं, कान दिये हैं मगर सुनते नहीं हैं यह जानवर हैं बल्कि जानवर से भी बदतर'' अब फैसला आपको ख़ुद करना है कि अगर बे सोचे समझे क़दम उठाएँगे तो इन्सान की सफ में होंगे या जानवरों की।

मौलाना ने शहर की सियासत पर इशारा करते हुए कहा कि एक लीडर ने एलेक्शन में कामियाबी के लिये अपने एजेन्टों के ज़रिये फसाद करवाया जो आपके सामने है अवाम को ख़ुद समझदारी का सुबूत देते हुए सोच समझ कर क़दम उठाना चाहिए न सियासी मोलवियों की बातों में आना है न नेताओं की सियासत में क्योंकि फसाद से मुसलमानों के कारोबार पर भी असर पड़ता है अवाम की दुकानें बन्द होती हैं और मोलवियों की दुकानें खुल जाती हैं। ख़ुतबे के आख़िर में मौलाना ने जुलूसों के मुआहेदे के सिलसिले में साफ किया कि जुलूसों का मुआहेदा इन्तिज़ामिया के साथ हुआ था और इन्तिज़ामिया की तरफ से कोई बयान नहीं आया है इसलिए अज़ादारी के जुलूसों का मुआहेदा उसी तरह क़ायम है।

हमला होने पर मुँहतोड़ जवाब दिया जायेगा: आयतुल्लाह ख़ामेना-ई का एलान

तेहरान। वलिए अम्रे मुस्लिमीन आयतुल्लाहिल उज़मा सै0 अली ख़ामेना–ई ने पश्चिमी देशों को धमकी दी है कि विवादित न्युकिलियाई प्रोग्राम के मसले पर अगर ईरान पर हमला किया गया तो उसका मुँहतोड़ जवाब दिया जायेगा। बी0बी0सी0 की निगरानी में चलने वाले एक स्थानीय टेलीवीज़न चैनल के मुताबिक़ आयतुल्लाह ख़ामेना–ई ने मुक़द्दस शहर मशहद में जश्ने नौरोज़ के मौक़े पर कहा कि अगर वह लोग हमें धमकाना चाहते हैं और हमारे ख़िलाफ ताक़त इस्तेमाल करना चाहते हैं तो उन्हें इस बात में कोई शक नहीं होना चाहिए कि ईरानी लीडर बदला लेने के लिये अपनी पूरी ताक़त लगा देंगे।

ईरान पर हमला हुआ तो एक भी अमरीकी फ़ौजी ज़िन्दा वापस नहीं जायेगा: एडमिरल मुर्तज़ा सफ़वी

तेहरान– ईरान के आला फौजी अफसर ने अमरीका को धमकी दी है कि अगर उसने ईरान पर हमला करने की ग़लती की तो फिर इसका उसे बहुत भयानक अन्जाम भुगतना पड़ेगा। ईरानी समुन्द्री सेना के चीफ कमाण्डर एडमिरल मुर्तज़ा सफवी ने संयुक्त राष्ट्र में ईरान के ख़िलाफ कारोबारी पाबन्दी के सुझाव पास करने के दो दिनों बाद अमरीका को धमकी देते हुए कहा कि अगर अमरीका ने ईरान के ख़िलाफ जंग शुरु की तो फिर उसे ख़त्म करने का काम उसके हाथों में नहीं रहेगा। उन्होंने कहा कि हमारे अवाम एक भी अमरीकी फौजी को हमारे मुल्क से ज़िन्दा वापस जाने नहीं देंगे। एडमिरल मुर्तज़ा सफवी ने कहा कि हमारा मुल्क में इत्तेहाद और शहादत का दर्जा पाने की चाहत और अल्लाह तआला की मदद से हम हमेशा जीत और कामियाबी हासिल करेंगे।

इराक़ में शीआ-सुन्नी इत्तेहाद कभी टूट नहीं सकता: अल्लामा मुहम्मद अल-अवामी

अल-मुअम्मल कल्चरल फाउण्डेशन की इफ़्तेताही तक़रीब से ख़िताब

लखनऊ। लखनऊ 16 अप्रैल– सांस्कृतिक संस्था अल–मुअम्मल कल्चरल फाउण्डेशन के नव–निर्मित भवन का सरफराज़गंज में जद्दा से आए आयतुल्लाहिल उज़मा सै0 अली सीस्तानी के वकील और अल–मुअम्मल कल्चरल फाउण्डेशन के सरपरस्त वरिष्ठ शिया धर्मगुरु मुहम्मद अल–अवामी ने उद्घाटन करते हुए कहा कि आज दुनिया में इस्लाम को बदनाम करने के लिए न सिर्फ इराक़ में बल्कि पूरी दुनिया में मुसलमानों को आपस में लड़ाने की साज़िश रची जा रही है, इसे समझने व समझाने की ज़रूरत है क्योंकि जब जब मुसलमानों में इत्तेहाद क़ायम हुआ है पश्चिमी इस्लाम दुश्मन ताक़तों को मुँह की खानी पड़ी है।

उन्होंने आगे कहा कि जिस तरह भारत में सियासी साज़िश के तहत शिया सुन्नी दंगे करवाए जाते हैं, उसी तरह पाकिस्तान व इराक़ में दंगे करवाए जा रहे हैं ताकि आपस का इत्तेहाद टूटे और अमेरिका इज़राईल अपने मक़सद में कामयाब हों और इस्लाम व मुसलमान दुनिया में कमज़ोर पड़ जाएँ, क्योंकि उनकी इबादतगाहें वीरान होकर शॉपिंग मॉल व सिनेमाघरों में तब्दील हो रही हैं और इनके मज़हब को मानने वाले तेज़ी से दुनिया भर में मुसलमान हो रहे हैं।

इस अवसर पर रहबरे मुअज़्ज़म के नुमाइन्दे हुज्जतुल इस्लाम रजब नेजाद ने अल–मुअम्मल कल्चरल फाउण्डेशन का इफ्तेताह किया।

इस अवसर पर अल–मुअम्मल कल्चरल फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों ''इमामे अस्र और असरी तक़ाज़े'' (लेखक– आयतुल्लाह अब्दुल्लाह ग़ुरैफी) और ''हमारे अक़ीदे'' (लेखक– आयतुल्लाह नासिर मकारिम शीराज़ी) का विमोचन भी किया गया जो उर्दू व हिन्दी भाषा में प्रकाशित की गई हैं।

संस्थान के संचालक एहतेशामुल हसन ने सम्बोधित करते हुए कहा कि जल्द ही संस्थान कई अन्य किताबों का हिन्दी व उर्दू में प्रकाशन करेगा। उन्होंने आए हुए सभी मेहमानों का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि ये संस्थान जल्द ही आपसी इत्तेहाद व भाईचारा बढ़ाने के लिए कुछ नई योजनाओं की भी घोषणा करेगा।